विषय : हमारी संस्कृति और खेती

खेती है जान

हमारा राष्ट्र भारत है, भारत का एक प्रधान घटना है खेती। भारत एक कषीक राज्य है। खेतों में काम करना भारतनिवासियों का एक बड़ी आवश्य है। हम लोग खेतों को हमारे जीवन में एक प्रधान स्थान देता है और इस खेतों में हुआ धान्यों को। खेत में काम करते लोग किसान है। किसान सभी जनताओं को भूख तब्दील करनेकेलिए कोशिश करता है। खेत, खेती, किसान, हमारी और सभी जीवजन्तुओं का जान में एक प्रधान पात्र है।

खेती को कबी-कबी साल पुरानी है। इस हमारी रूढ़ी पहचानी है। पुरानी काल में हमारे किसान उसके परिवार और उसके गाँव केलिए खेत में काम करती थी। कई साल के पहले कब

हमारे भारत को वे अंग्रेज़ सिपाहियों आता है, उस समय से हमारी खेत और खेती का नाश को आरंभ करता है।

प्राचीन समाज में खेती नहीं थी क्योंकि हमारे बूढ़ी आदमियों जंगल और नदी में हुआ भोजन खा जाता था। फल, माँस्च या मछलीयाँ। और कई दिनों के बाद हमारे पूर्वीक जनता खेती को सोचता था। वे खेती को आरंभ किया। धान्यों को खेती करता था।

खेती है हमारी सबी विकसन का कारण। मानसिक और शारिरिक रूप से खेती हमको सहाय देता है। सबी लोग खेतों को और खेतियों को प्यार करता था। इस खेती हमारे लोग का एक अनिवार्य घटना से नष्टील हो गई।

इसके बाद जब अंग्रेज़ सिपाहियों हमारे भारत में आता वे हमारे सबी संस्कृति को विनाश केलिए कुछ-कुछ नहीं कुछ बड़ा-बड़ा बात ने किया।

बंगाल में वे प्रदेश का लोग उसके गाँव और परिवार का आवश्यों संतृप्त करने केलिए खेती करता है। वे अंग्रेज़ी शीपाहियों ने इस सबी का अधिकार चाहते थे। अंतिम में वह इस खेतों और सबी स्थान का अधिकार मिलता है। वे इस किसान को चूषण करता है। भोजन धान्यों को बदले बाकी को खेती करने केलिए किसान निर्बन्हीन होता था। हमारा भारत का मीट्टि बहुत अच्छा थी। वे भूर्तृष ने इस खेतों और मिट्टि का फलभूयिष्टता को चूषण करते थे। भारत का ... वे शिपाहियों का अधिकार में है उस समय 6.3%

किसान सबी तरह चूषण से क्षीणीन होता था। एक प्रधान बात है टाक्स। वे हमारे किसान का टाक्स और निकुती को चुनते थे। महलवारी, पेरमनन्ट लान्ड रेवन्यू सीस्टम सेट्टिलमेन्ट आदी वे मनाते हुआ निकुती चुनते विभाग है।

इस सभी चूषण के कारण किसान ने खेती को अहिषकरण करता था। लेकिन तेर अंदर में खेती का प्यार, विश्वास आदि हुआ था। सभी लोग बाकि काम को खोजते थे। कुछ लोग खेती को न अहिषकरण करता था।

खेती के कारण हमारे समाज में कुछ त्योहार को उन्भव होता है। इससे एक है 'ओणम'। ओणम केरल में मनाते एक त्योहार है। सभी केरलीय जनता यह त्योहार को मनाता है। किसान ने खेत में काम करते समय कुछ-कुछ गानओं गाता है। खेत में काम करना और इस काम का अनुभव कुछ व्यत्यस्त है।

आज का समाज में खेती को प्राधान्य हम लोग न देता है। लेकिन हमारी रूढी में इस का प्राधान्य बहुत बड़ा था। सभी लोग खेती को प्यार करते थे। ये काम उससे मानसीक और शारिरीक

आश्चय होता क्या इस काम हमारे तन केलिए बहुत अच्छी है। यह एक व्यायाम भी है।

आज हमारे समाज में और भारत में खेती और किसान का संख्या छोटी है। इसका कारण हमारी संस्कृति हम लोग के पास से निकल जाता है। भारत का भविष्य में खेतों को कबी स्थान नहीं है। क्योंकि हमारी युवता इसी तरह काम को करने केलिए अलसता प्रकट करता है। खेतों को वे चुषण करता है। बड़ी-बड़ी घर और स्थापन उस खेती का स्थान में आता है।

इसका कारण भारत खेती की स्थान बहुत पीछे है। और समकालिक में सबी फल, सब्जी पोयसन ने उपयोग करते बनता है। क्योंकि खेत से काम करने को समय कुछ और इससे हुआ लाभ बड़ा।

भारत में खेती का प्राधान्य बढ़ाने का अवश्यकता

हमारा है क्योंकि हम भारतीय है। सबी राष्ट्र का आवश्य है खेती और धान्य लभ्यता। खेती न हुआ धान्य नहीं हुआ। हमारे युवता को खेती का प्राधान्य समझने केलिए हमको खेती करने केलिए तैयार करो। हमारे भरणाधिकारियों ने खेती का इस आवश्यकता समझकर किसान को विकसन करनेकेलिए कुछ कुछ कम्मिषन बनना है। इस भरणकर्ताओं के साथ हमको खेती विकासन केलिए प्रवृत्तन करो।

हमारी रूढ़ी संस्कार और संस्कृति को संयोजन करना हमारा दायित्व है। न खेती हुआ तो न धान्य न धान हुआ तो गरीबी जरूर आई और गरीबी से हम अधिक लोगों मृत्यु हो गई। खेती का संस्कृति हम आदमियों का संस्कृति। खेती को विकसित करना जरूरी बात है। खेती और आदमी एक ही है। खेती नहीं तो आदमी नहीं, आदमी नहीं तो खेती नहीं।

खेती को संरक्षण करो जान बचाओ।